चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	16.10.2020	02	07-08

2-DAY KRISHI MELA CONCLUDES

Hisar: Speaking at the valedictory function of two-day Krishi Mela organised by Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University here, Haryana Legislative Assembly Deputy Speaker Ranbir Singh Gangwa said to check the falling underground water level and the depleting soil fertility, the farmers should adopt drip irrigation and crop diversification. This will not only check water wastage but also provide financial benefits to farmers by making the environment safe. He called upon the farmers that instead of burning paddy straw, they should manage the straw properly by adopting methods suggested by agricultural scientists so that environmental pollution can be checked and the fertility of the soil should also be maintained. The Deputy Speaker asked farmers to adopt organic farming and crop diversification, as well as use the seeds of high yielding varieties of crops and vegetables.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	16.10.2020	02	06-08

कृषि विशेषज्ञ बोले- फसल की बिजाई और देखभाल करें तो ले सकते हैं बेहतर पैदावार

एचएयू के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन बुधवार रात वेबिनार आयोजित

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन बुधवार की रात वेबिनार आयोजित किया गया। वेबिनार में वैज्ञानिकों ने किसानों को रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तौर तरीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने वेबिनार की अध्यक्षता की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने कहा कि अगर किसान विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई व देखभाल करे तो वह अच्छी पैदावार ले सकता है। वैज्ञानिकों ने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल की बिजाई करने से पहले अपने खेत की मिट्टी की जांच, पानी की उपलब्धता, अपने क्षेत्र अनुसार सिफारिश की गई फसल के लिए बीज की किस्म, जरूरतानुसार बीजोपचार आदि का विशेष ध्यान रखे। कई बार किसान एक-दूसरे की होड करते हुए फसल की बिजाई कर देते हैं तथा अंधाधुंध खाद व दवाइयों को फसल में डालते हैं, जिससे किसान को फसल से उचित उत्पादन नहीं मिल पाता और उसे आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है।

एचएयू के वर्चुअल कृषि मेले के दौरान उपस्थित वैज्ञानिक।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	16.10.2020	02	06

पराली प्रबंधन पर वेबिनार में वैज्ञानिकों ने रखे विचार, किसानों से हुए रूबरू

हिसार| चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा पराली प्रबंधन को लेकर वेबिनार आयोजित किया गया।वेबिनार में सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.एस. पूनिया ने बताया कि धान की सीधी बिजाई बहुत ही कारगर साबित हो रही है और प्रदेश सरकार की योजना मेरा पानी मेरी विरासत को भी सार्थक सिद्ध कर रही है। इससे न केवल पानी की बचत होती है बल्कि खर्च भी कद्दू करके की जाने वाली बिजाई से कम होता है। इससे फसल के उत्पादन या तो परम्परागत विधि के बराबर है या फिर अधिक होता है। वेबिनार के दौरान धान की सीधी बिजाई को लेकर किसानों ने अपने अनुभव भी वैज्ञानिकों के साथ साझा किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	16.10.2020	02	06

किसानों को पैदावार बढ़ाने के तरीके बताए

जागरण संवाददाता, हिसार : एचएयू के वर्चुअल कृषि मेले में रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए आयोजित वेबिनार में विज्ञानियों ने रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तरीके बताए। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डा. एके छाबड़ा ने वेबिनार की अध्यक्षता की।

विज्ञानियों ने कहा कि अगर किसान विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई व देखभाल करे तो वह अच्छी पैदावार ले सकता है। किसान बिजाई से पहले खेत की मिट्टी की जांच, पानी की उपलब्धता, अपने क्षेत्र अनुसार सिफारिश की गई फसल के लिए बीज की किस्म, जरूरतानुसार बीजोपचार आदि का ध्यान रखें। अंधाधुंध खाद व दवाइयां फसल में डालने से भी पैदावार घटती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	16.10.2020	02	03-04

किसानों को फसलों की पैदावार बढ़ाने के दिए टिप्स

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किसानों को रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तौर तरीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वैज्ञानिकों ने कहा कि अगर किसान विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई व देखभाल करें तो वह अच्छी पैदावार ले सकता है। वैज्ञानिकों ने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल की बिजाई करने से पहले अपने खेत की मिट्टी की जांच, पानी की उपलब्धता, अपने क्षेत्र अनुसार सिफारिश की गई फसल के लिए बीज की किस्म, जरूरतानुसार बीजोपचार आदि का विशेष ध्यान रखे।

कई बार किसान एक-दूसरे की होड़ करते हुए फसल की बिजाई कर देते हैं तथा अंधाधुंध खाद व दवाइयों को फसल में डालते हैं, जिससे किसान को फसल से उचित उत्पादन नहीं मिल पाता और उसे आर्थिक नुक्सान भी उठाना पड़ता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	16.10.2020	02	06

दुधारू पशुओं में थनैला रोग से बचाव के दिए टिप्स

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित वैबिनार में पशुपालकों को दूधारू पशुओं में होने वाले थनैला रोग के कारणों, उपचार व निदान को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्व विद्यालय की केंद्रीय प्रयोगशाला के इंचार्ज डॉ. नरेश कक्कड़ ने कहा कि पशुपालक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखकर व अपने दूध दोहने के तरीके में बदलाव कर इस रोग पर काफी हद तक काबू पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कई पशुपालक अंगूठे की सहायता से दूध निकालते हैं जो कि गलत तरीका है, दूध को केवल बंद मुट्ठी से निकालने की आदत डालनी चाहिए। इसके अलावा दूध दोहने के बाद पशु के थनों को जीवाणु रोधक से साफ करना चाहिए। पशु के बैठने की जगह पर भी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**16.10.2020**	——	--

कृषि मेला रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के दिए सुझाव

किसानों को फसलों की पैदावार बढ़ाने के दिए टिप्स

सच कहूँ/संदीप सिंहमार
हिसार।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने को लेकर आयोजित वेबिनार में वैज्ञानिकों ने किसानों को रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तौर तरीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने वेबिनार की अध्यक्षता की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने कहा कि अगर किसान विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई व देखभाल करे तो वह अच्छी पैदावार ले सकता है। वैज्ञानिकों ने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल की बिजाई करने से पहले अपने खेत की मिट्टी की जांच, पानी की उपलब्धता, अपने क्षेत्र अनुसार सिफारिश की गई फसल के लिए बीज की किस्म, जरुरतानुसार बीजोपचार आदि का विशेष ध्यान रखे। कई बार किसान एक-दूसरे की होड करते हुए फसल की बिजाई कर देते हैं तथा अंधाधुंध खाद व दवाइयों को फसल में डालते हैं, जिससे किसान को फसल से उचित उत्पादन नहीं मिल पाता और उसे आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है।

" वर्चुअल कृषि मेले के दौरान उपस्थित वैज्ञानिक एवं किसानों से सवाल-जवाब करते वैज्ञानिक।"

सिफारिश अनुसार बिजाई से मिला डेढ़ गुणा अधिक उत्पादन

वेबिनार के दौरान उत्तर प्रदेश से किसान आशीष राय ने अपने विचार साझा करते हुए बताया कि उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश अनुसार चने की एच.सी.-5 किस्म की बिजाई की थी। इससे वैज्ञानिकों द्वारा बताए गए औसत उत्पादन 23 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की तुलना में उसे डेढ गुणा उत्पादन अधिक मिला है। इसके लिए उसे उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से सम्मानित भी किया गया। इसी प्रकार गांव दरियापूर (भिवानी) के किसान रामनिवास ने बताया कि वह पिछले पांच-छह सालों से टपका विधि से रेतीली जमीन में नरमा कपास की बिजाई कर रहा है और उसे औसतन उत्पादन भी प्रति एकड़ 30 से 35 मण तक मिल रहा है। इससे पानी व खाद की भी बचत होती है। उन्होंने बताया कि इस बार रेतीले क्षेत्रों में नरमा कपास की फसल में आई समस्या का प्रभाव उसकी फसल में कम देखने को मिला।

वेबिनार के दौरान डॉ. विक्रम ने गेहूं व जौ, डॉ. रामअवतार ने तिलहनी फसलों, डॉ. डी.एस. फोगाट ने बारे वाली फसलों, डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने कपास, डॉ. अजीत राठी ने पौध रोग नियंत्रण, डॉ. वी.एस. मोर ने बीज उत्पादन में सावधानियां, डॉ. एम.सी. कंबोज ने मक्का की काश्त, डॉ. पवन कुमार ने औषधीय व सुगंधित फसलों की खेती व डॉ. एम.एल. खिच्चड़ ने मौसम पूर्वानुमान का फसलों में महत्व सहित कई वैज्ञानिकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**16.10.2020**	——	--

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि मेले का आयोजन

किसानों को फसलों, पशुओं और रोगों पर वैज्ञानिकों ने दी उपयोगी जानकारी

3 वैबिनार करवाए गए, किसानों ने भी अपने विचार साझा किए

चंडीगढ़, 15 अक्तूबर (सवेरा ब्यूरो) : हिसार स्थित चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में विभिन्न वेबिनार आयोजित किए गए। इस दौरान पहला वेबिनार धान की सीधी बिजाई, दूसरा वेबिनार दुधारू पशुओं में थनैला रोग व उसकी रोकथाम तथा तीसरे वेबिनार में रबी फसलों की पैदावार बढ़ाना आदि विषयों पर वैज्ञानिकों द्वारा जानकारी दी गई।

विश्वविद्यालय के प्रवक्ता ने बताया कि इस वेबिनार में सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.एस. पूनिया ने धान की सीधी बिजाई के बारे में बताया कि यह विधि बहुत ही कारगर साबित हो रही है। प्रदेश सरकार की योजना 'मेरा पानी मेरी विरासत' को भी सार्थक सिद्ध कर रही है। इससे न केवल पानी की बचत होती है बल्कि खर्च भी कदू करके की जाने वाली बिजाई से कम होता है। इससे फसल का उत्पादन या तो परम्परागत विधि के बराबर है या फिर इससे अधिक होता है। वेबिनार के दौरान धान की सीधी बिजाई को लेकर किसानों ने अपने अनुभव भी वैज्ञानिकों के साथ सांझा किए। इस दौरान असंध से कृषि विकास अधिकारी श्याम सिंह ने बताया कि धान की बिजाई को लेकर विश्वविद्यालय की सिफारिश हर साल 25 जून तक के लिए की गई है। इसे मई के अंतिम सप्ताह से जून के प्रथम सप्ताह तक किए जाने के बारे में और अधिक शोध करने की जरूरत है। क्योंकि इस समय पानी व मजदूरों की समस्या नहीं होती।

प्रवक्ता ने बताया कि दूसरे वेबिनार में दुधारू पशुओं में थनैला रोग व उसकी रोकथाम को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय की केंद्रीय प्रयोगशाला के इंचार्ज डॉ. नरेश कक्कड़ ने कहा कि पशुपालक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखकर व अपने दूध दोहने के तरीके में बदलाव कर इस रोग पर काफी हद तक काबू पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कई पशुपालक अंगूठे की सहायता से दूध निकालते हैं जो कि गलत तरीका है, दूध को केवल बंद मुट्ठी से निकालने की आदत डालनी चाहिए। इसके अलावा दूध दोहने के बाद पशु के थनों को जीवाणु रोधक से साफ करना चाहिए। पशु के बैठने की जगह पर भी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

डॉ. राजेश छाबड़ा ने बताया कि किसान बिना उचित जांच के ही उपचार के लिए पशु को एंटीबायटिक का अंधाधुंध प्रयोग करने लग जाते हैं जिससे पशु की जीवाणु रोधक क्षमता कम हो जाती है, जो घातक है। इसके अलावा प्रयोगशाला में जांच के बाद ही उचित उपचार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पशुपालक अपने स्तर पर भी कैलिफोर्निया मैसटाइटस किट के माध्यम से घर पर ही थनैला रोग की जांच कर सकते हैं। वेबिनार में पशुपालकों ने वैज्ञानिकों से थनैला रोग के लक्षणों व उसके समाधान को लेकर प्रश्न भी किए । चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के तीसरे वेबिनार में वैज्ञानिकों ने किसानों को रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तौर तरीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के दौरान उत्तर प्रदेश से किसान आशीष राय ने बताया कि उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश अनुसार चने की एच.सी.-5 किस्म की बिजाई की थी। इससे वैज्ञानिकों द्वारा बताए गए औसत उत्पादन 23 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की तुलना में उसे डेढ़ गुणा उत्पादन अधिक मिला है। इसके लिए उसे उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से सम्मानित भी किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	**15.10.2020**	——	--

धान की सीधी बिजाई है कारगरः डॉ. पूनिया

पल पल न्यूजः हिसार, 15 अक्टूबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में विभिन्न वेबिनार आयोजित किए गए। इस दौरान पहला वेबिनार धान की सीधी बिजाई विषय को लेकर किया गया। इस वेबिनार में सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.एस. पूनिया ने बताया कि यह विधि बहुत ही कारगर साबित हो रही है और प्रदेश सरकार की योजना मेरा पानी मेरी विरासत को भी सार्थक सिद्ध कर रही है। इससे न केवल पानी की बचत होती है बल्कि खर्च भी कद्दू करके की जाने वाली बिजाई से कम होता है। इससे फसल के उत्पादन या तो परम्परागत विधि के बराबर है या फिर अधिक होता है। इस वेबिनार के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान(अटारी के निदेशक डॉ. राजवीर सिंह, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एस. भुल्लर, सहायक वैज्ञानिक डॉ. जसवीर गिल, एचएयू से इंजीनियर अनिल सरोहा, डॉ. नवीश, डॉ. संदीप रावल के अलावा भठिण्डा से किसान गुरप्रीत सिंह, लुधियाना से अमृत इंद्र सिंह, यमुनानगर से जसबीर सिंह और मंगत राम सहित अन्य किसानों ने जुड?र वैज्ञानिकों से सवाल-जवाब किए। वेबिनार के दौरान धान की सीधी बिजाई को लेकर किसानों ने अपने अनुभव भी वैज्ञानिकों के साथ साझा किए। इस दौरान असंध से कृषि विकास अधिकारी श्याम सिंह ने बताया कि धान की बिजाई को लेकर विश्वविद्यालय की सिफारिश हर साल 25 जून तक के लिए की गई है जबकि इसे मई के अंतिम सप्ताह से जून के प्रथम सप्ताह तक किए जाने के बारे में और अधिक शोध करने की जरूरत है। क्योंकि इस समय पानी व मजदूरों की समस्या नहीं होती।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	**15.10.2020**	——	--

किसानों को फसलों की पैदावार बढ़ाने के दिए टिप्स

अगर किसान विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई व देखभाल करे तो वह अच्छी पैदावार ले सकता हैः वैज्ञानिक

पल पल न्यूजः हिसार, 15 अक्टूबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने को लेकर आयोजित वेबिनार में वैज्ञानिकों ने किसानों को रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तौर तरीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने वेबिनार की अध्यक्षता की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने कहा कि अगर किसान विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई व देखभाल करे तो वह अच्छी पैदावार ले सकता है। वैज्ञानिकों ने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल की बिजाई करने से पहले अपने खेत की मिट्टी की जांच, पानी की उपलब्धता, अपने क्षेत्र अनुसार सिफारिश की गई फसल के लिए बीज की किस्म, जरूरतानुसार बीजोपचार आदि का विशेष ध्यान रखे। कई बार किसान एक-दूसरे की होड करते हुए फसल की बिजाई कर देते हैं तथा अंधाधुंध खाद व दवाइयों को फसल में डालते हैं, जिससे किसान को फसल से उचित उत्पादन नहीं मिल पाता और उसे आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है।

वेबिनार के दौरान उत्तर प्रदेश से किसान आशीष राय ने अपने विचार साझा करते हुए बताया कि उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश अनुसार चने की एच.सी.-5 किस्म की बिजाई की थी। इससे वैज्ञानिकों द्वारा बताए गए औसत उत्पादन 23 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की तुलना में उसे डेढ गुणा उत्पादन अधिक मिला है। इसके लिए उसे उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से सम्मानित भी किया गया। इसी प्रकार गांव दरियापूर(भिवानी)के किसान रामनिवास ने बताया कि वह पिछले पांच-छह सालों से टपका विधि से रेतीली जमीन में नरमा कपास की बिजाई कर रहा है और उसे औसतन उत्पादन भी प्रति एकड़ 30 से 35 मण तक मिल रहा है। इससे पानी व खाद की भी बचत होती है। उन्होंने बताया कि इस बार रेतीले क्षेत्रों में नरमा कपास की फसल में आई समस्या का प्रभाव उसकी फसल में कम देखने को मिला। वेबिनार के दौरान डॉ. विक्रम ने गेहूं व जौ, डॉ. रामअवतार ने तिलहनी फसलों, डॉ. डी.एस. फोगाट ने चारे वाली फसलों, डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने कपास, डॉ. अजीत राठी ने पौध रोग नियंत्रण, डॉ. वी.एस. मोर ने बीज उत्पादन में सावधानियां, डॉ. एम.सी. कंबोज ने मक्का की काश्त, डॉ. पवन कुमार ने औषधीय व सुगंधित फसलों की खेती व डॉ. एम.एल. खिच्चड़ ने मौसम पूर्वामान का फसलों में महत्व सहित कई वैज्ञानिकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	**15.10.2020**	——	--

सार समाचार

स्वच्छता व दूध दोहने के तरीके का खास ध्यान रखें पशुपालक

पल पल न्यूज: हिसार, 15 अक्टूबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के कार्यक्रम के दूसरे वेबिनार का विषय दूधारू पशुओं में थनैला रोग व उसकी रोकथाम रखा गया जिसमें पशुपालकों को दूधारू पशुओं में होने वाले थनैला रोग के कारणों, उपचार व निदान को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय की केंद्रीय प्रयोगशाला के इंचार्ज डॉ. नरेश कक्कड़ ने कहा कि पशुपालक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखकर व अपने दूध दोहने के तरीके में बदलाव कर इस रोग पर काफी हद तक काबू पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कई पशुपालक अंगुठे की सहायता से दूध निकालते हैं जो कि गलत तरीका है, दूध को केवल बंद मुट्ठी से निकालने की आदत डालनी चाहिए। इसके अलावा दूध दोहने के बाद पशु के थनों को जीवाणु रोधक से साफ करना चाहिए। पशु के बैठने की जगह पर भी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। डॉ. राजेश छाबड़ा ने बताया कि किसान बिना उचित जांच के ही उपचार के लिए पशु को एंटीबायटिक का अंधाधुंध प्रयोग करने लग जाते हैं जिससे पशु की जीवाणु रोधक क्षमता कम हो जाती है, जो घातक है। इसके अलावा प्रयोगशाला में जांच के बाद ही उचित उपचार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पशुपालन अपने स्तर पर भी कैलिफोर्निया मेसटाइटिस किट के माध्यम से घर पर ही थनैला रोग की जांच कर सकते हैं। वेबिनार में पशुपालकों ने वैज्ञानिकों से थनैला रोग के लक्षणों व उसके समाधान को लेकर प्रश्नोत्तर भी किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**15.10.2020**	——	--

धान की सीधी बिजाई है कारगर : डॉ. एस.एस. पूनिया

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 15 अक्टूबर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में विभिन्न वेबिनार आयोजित किए गए। इस दौरान पहला वेबिनार धान की सीधी बिजाई विषय को लेकर किया गया। इस वेबिनार में सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.एस. पूनिया ने बताया कि यह विधि बहुत ही कारगर साबित हो रही है और प्रदेश सरकार की योजना मेरा पानी मेरी विरासत को भी सार्थक सिद्ध कर रही है। इससे न केवल पानी की बचत होती है बल्कि खर्च भी कद्दू करके की जाने वाली बिजाई से कम होता है। इससे फसल के उत्पादन या तो परम्परागत विधि के बराबर है या फिर अधिक होता है। वेबिनार के दौरान धान की सीधी बिजाई को लेकर किसानों ने अपने अनुभव भी वैज्ञानिकों के साथ साझा किए। इस दौरान असंध से कृषि विकास अधिकारी श्याम सिंह ने बताया कि धान की बिजाई को लेकर विश्वविद्यालय की सिफारिश हर साल 25 जून तक के लिए की गई है जबकि इसे मई के अंतिम सप्ताह से जून के प्रथम सप्ताह तक किए जाने के बारे में और अधिक शोध करने की जरूरत है। क्योंकि इस समय पानी व मजदूरों की समस्या नहीं होती। इसी प्रकार एक किसान ने खरपतवार की समस्या को लेकर भी जानकारी हासिल की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**15.10.2020**	——	--

दुधारू पशुओं में थनैला रोग से बचाव के दिए टिप्स

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 15 अक्टूबर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के कार्यक्रम के दूसरे वेबिनार का विषय दुधारू पशुओं में थनैला रोग व उसकी रोकथाम रखा गया जिसमें पशुपालकों को दूधारू पशुओं में होने वाले थनैला रोग के कारणों, उपचार व निदान को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय की केंद्रीय प्रयोगशाला के इंचार्ज डॉ. नरेश कक्कड़ ने कहा कि पशुपालक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखकर व अपने दूध दोहने के तरीके में बदलाव कर इस रोग पर काफी हद तक काबू पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कई पशुपालक अंगूठे की सहायता से दूध निकालते हैं जो कि गलत तरीका है, दूध को केवल बंद मुट्ठी से निकालने की आदत

डालनी चाहिए। इसके अलावा दूध दोहने के बाद पशु के थनों को जीवाणु रोधक से साफ करना चाहिए। पशु के बैठने की जगह पर भी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। डॉ. राजेश छाबड़ा ने बताया कि किसान बिना उचित जांच के ही उपचार के लिए पशु को एंटीबायटिक का अंधाधूंध प्रयोग करने लग जाते हैं जिससे पशु की जीवाणु रोधक क्षमता कम हो जाती है, जो घातक है। इसके अलावा प्रयोगशाला में जांच के बाद ही उचित उपचार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पशुपालन अपने स्तर पर भी कैलिफोर्निया मेसटाइटिस किट के माध्यम से घर पर ही थनैला रोग की जांच कर सकते हैं। वेबिनार में पशुपालकों ने वैज्ञानिकों से थनैला रोग के लक्षणों व उसके समाधान को लेकर प्रश्नोत्तर भी किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**15.10.2020**	——	--

रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के दिए सुझाव

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 15 अक्टूबर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने को लेकर आयोजित वेबिनार में वैज्ञानिकों ने किसानों को रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तौर तरीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने वेबिनार की अध्यक्षता की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने कहा कि अगर किसान विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई व देखभाल करे तो वह अच्छी पैदावार ले सकता है। वैज्ञानिकों ने

किसानों से आह्वान किया कि वे फसल की बिजाई करने से पहले अपने खेत की मिट्टी की जांच, पानी की उपलब्धता, अपने क्षेत्र अनुसार सिफारिश की गई फसल के लिए बीज की किस्म, जरूरतानुसार बीजोपचार आदि का विशेष ध्यान रखे। कई बार किसान एक-दूसरे की होड करते हुए फसल की बिजाई कर देते हैं तथा अंधाधुंध खाद व दवाइयों को फसल में डालते हैं, जिससे किसान को फसल से उचित उत्पादन नहीं मिल पाता और उसे आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**15.10.2020**	——	--

पशुपालकों को दी पशुओं में रोग के निदान की जानकारी

हिसार/15 अक्टूबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन वैबिनार में दूधारू पशुओं में थनैला रोग व उसकी रोकथाम पर पशुपालकों से चर्चा की गई। इस दौरान लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय की केंद्रीय प्रयोगशाला के इंचार्ज डॉ. नरेश कक्कड़ ने कहा कि पशुपालक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखकर व अपने दूध दोहने के तरीके में बदलाव कर इस रोग पर काफी हद तक काबू पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कई पशुपालक अंगुठे की सहायता से दूध निकालते हैं जो कि गलत तरीका है, दूध को केवल बंद मुट्ठी से निकालने की आदत डालनी चाहिए। इसके अलावा दूध दोहने के बाद पशु के थनों को जीवाणु रोधक से साफ करना चाहिए। पशु के बैठने की जगह पर भी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। डॉ. राजेश छाबड़ा ने बताया कि किसान बिना उचित जांच के ही उपचार के लिए पशु को एंटीबायटिक का अंधाधूंध प्रयोग करने लग जाते हैं जिससे पशु की जीवाणु रोधक क्षमता कम हो जाती है, जो घातक है। इसके अलावा प्रयोगशाला में जांच के बाद ही उचित उपचार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पशुपालक अपने स्तर पर भी कैलिफोर्निया मेसटाइटिस किट के माध्यम से घर पर ही थनैला रोग की जांच कर सकते हैं। वैबिनार में पशुपालकों ने वैज्ञानिकों से थनैला रोग के लक्षणों व उसके समाधान को लेकर प्रश्नोत्तर भी किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**15.10.2020**	——	--

कृषि मेले में वैबिनार के माध्यम से दी किसानों को जानकारियां

हिसार/15 अक्टूबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में विभिन्न वैबिनार आयोजित किए गए। इस दौरान पहला वैबिनार धान की सीधी बिजाई विषय को लेकर किया गया। इस वेबिनार में सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसएस पूनिया ने बताया कि यह विधि बहुत ही कारगर साबित हो रही है और प्रदेश सरकार की योजना मेरा पानी मेरी विरासत को भी सार्थक सिद्ध कर रही है। इससे न केवल पानी की बचत होती है बल्कि खर्च भी कद्दू करके की जाने वाली बिजाई से कम होता है। इससे फसल के उत्पादन या तो परम्परागत विधि के बराबर है या फिर अधिक होता है। इस वैबिनार के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी के निदेशक डॉ. राजवीर सिंह, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ.

एमएस भुल्लर, सहायक वैज्ञानिक डॉ. जसवीर गिल, एचएयू से इंजीनियर अनिल सरोहा, डॉ. नवीश, डॉ. संदीप रावल के अलावा भठिण्डा से किसान गुरप्रीत सिंह, लुधियाना से अमृत इंद्र सिंह, यमुनानगर से जसबीर सिंह और मंगत राम सहित अन्य किसानों ने जुड़कर वैज्ञानिकों से सवाल-जवाब किए। वेबिनार के दौरान धान की सीधी बिजाई को लेकर किसानों ने अपने अनुभव भी वैज्ञानिकों के साथ साझा किए। वर्चुअल कृषि मेले में रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने को लेकर आयोजित वैबिनार में वैज्ञानिकों ने किसानों को रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तौर तरीकों के बारे में जानकारी दी। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने वैबिनार की अध्यक्षता की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने कहा कि अगर किसान विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई व देखभाल करे तो वह अच्छी पैदावार ले सकता है। वैज्ञानिकों ने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल की बिजाई करने से पहले अपने खेत की मिट्टी की जांच, पानी की उपलब्धता, अपने क्षेत्र अनुसार सिफारिश की गई फसल के लिए बीज की किस्म, जरूरतानुसार बीजोपचार आदि का विशेष ध्यान रखे। कई बार किसान एक-दूसरे की होड करते हुए फसल की बिजाई कर देते हैं तथा अंधाधुंध खाद व दवाइयों को फसल में डालते हैं, जिससे किसान को फसल से उचित उत्पादन नहीं मिल पाता और उसे आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है। वैबिनार के दौरान डॉ. विक्रम ने गेहूं व जौ, डॉ. रामअवतार ने तिलहनी फसलों, डॉ. डीएस फोगाट ने चारे वाली फसलों, डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने कपास, डॉ. अजीत राठी ने पौध रोग नियंत्रण, डॉ. वी.एस. मोर ने बीज उत्पादन में सावधानियां, डॉ. एमसी कंबोज ने मक्का की काश्त, डॉ. पवन कुमार ने औषधीय व सुगंधित फसलों की खेती व डॉ. एम.एल. खिच्चड़ ने मौसम पूर्वामान का फसलों में महत्व सहित कई वैज्ञानिकों ने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर धोष	**15.10.2020**	——	--

दुधारू पशुओं में थनैला रोग से बचाव के दिए टिप्स

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के कार्यक्रम के दूसरे वेबिनार का विषय दूधारू पशुओं में थनैला रोग व उसकी रोकथाम रखा गया जिसमें पशुपालकों को दूधारू पशुओं में होने वाले थनैला रोग के कारणों, उपचार व निदान को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय की केंद्रीय प्रयोगशाला के इंचार्ज डॉ. नरेश कक्कड़ ने कहा कि पशुपालक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखकर व अपने दूध दोहने के तरीके में बदलाव कर इस रोग पर काफी हद तक काबू पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कई पशुपालक अंगूठे की सहायता से दूध निकालते हैं जो कि गलत तरीका है, दूध को केवल बंद मुट्ठी से निकालने की आदत डालनी चाहिए। इसके अलावा दूध दोहने के बाद पशु के थनों को जीवाणुरोधक से साफ करना चाहिए। पशु के बैठने की जगह पर भी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**15.10.2020**	——	--

जानकारी हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दुधारू पशुओं में थनैला रोग से बचाव के दिए टिप्स

स्वच्छता व दूध दोहने के तरीके का खास ध्यान रखें पशुपालक

हिसार। वर्चुअल कृषि मेले के दौरान उपस्थित वैज्ञानिक एवं किसानों से सवाल-जवाब करते वैज्ञानिक।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के कार्यक्रम के दूसरे वेबिनार का विषय दूधारू पशुओं में थनैला रोग व उसकी रोकथाम रखा गया जिसमें पशुपालकों को दूधारू पशुओं में होने वाले थनैला रोग के कारणों, उपचार व निदान को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय

पशुपालक अपने स्तर पर भी कर सकते हैं रोग की जांच

डॉ. राजेश खावड़ा ने बताया कि किसान बिना उचित जांच के ही उपचार के लिए पशु को एंटीबायोटिक का अंधाधुंध प्रयोग करने लग जाते हैं जिससे पशु की जीवाणु रोधक क्षमता कम हो जाती है, जो घातक है। इसके अलावा प्रयोगशाला में जांच के बाद ही उचित उपचार किया जाना चाहिए।

की केंद्रीय प्रयोगशाला के इंचार्ज डॉ. नरेश कक्कड़ ने कहा कि पशुपालक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखकर व अपने दूध दोहने के तरीके में बदलाव कर इस रोग पर काफी हद तक काबू पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कई पशुपालक अंगुठे की सहायता से दूध निकालते हैं जो कि गलत तरीका है, दूध को केवल बंद मुट्ठी से निकालने की आदत डालनी चाहिए। इसके अलावा दूध दोहने के बाद पशु के थनों को जीवाणु रोधक से साफ करना चाहिए। पशु के बैठने की जगह पर भी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**15.10.2020**	——	--

किसानों को रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के दिए टिप्स

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने को लेकर आयोजित वेबिनार में वैज्ञानिकों ने किसानों को रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तौर तरीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने वेबिनार की अध्यक्षता की।

इस दौरान वैज्ञानिकों ने कहा कि अगर किसान विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई व देखभाल करे तो वह अच्छी पैदावार ले सकता है। वैज्ञानिकों ने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल की बिजाई करने से पहले अपने खेत की मिट्टी की जांच, पानी की उपलब्धता, अपने क्षेत्र अनुसार सिफारिश की गई फसल के लिए बीज की किस्म, जरूरतानुसार बीजोपचार आदि का विशेष ध्यान रखे। कई बार किसान एक-दूसरे की होड करते हुए फसल की बिजाई कर देते है तथा अंधाधुंध खाद व दवाइयों को फसल में डालते है, जिससे किसान को फसल से उचित उत्पादन नहीं मिल पाता और उसे

आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है।

सिफारिश अनुसार बिजाई से मिला डेढ़ गुणा अधिक उत्पादन

वेबिनार के दौरान उत्तर प्रदेश से किसान आशीष राय ने अपने विचार साझा करते हुए बताया कि उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश अनुसार चने की एच.सी.-5 किस्म की बिजाई की थी। इससे वैज्ञानिकों द्वारा बताए गए औसत उत्पादन 23 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की तुलना में उसे डेढ गुणा उत्पादन अधिक मिला है। इसके लिए उसे उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से सम्मानित भी किया गया।

इसी प्रकार गांव दरियापूर(भिवानी)के किसान रामनिवास ने बताया कि वह पिछले पांच-छह सालों से टपका विधि से रेतीली जमीन में नरमा कपास की बिजाई कर रहा है और उसे औसतन उत्पादन भी प्रति एकड़ 30 से 35 मण तक मिल रहा है। इससे पानी व खाद की भी बचत होती है। उन्होंने बताया कि इस बार रेतीले क्षेत्रों में नरमा कपास की फसल में आई समस्या का प्रभाव उसकी फसल में कम देखने को मिला।

इन वैज्ञानिकों ने दिए सुझाव

वेबिनार के दौरान डॉ. विक्रम ने गेहूं व जौ, डॉ. रामअवतार ने तिलहनी फसलों, डॉ. डी.एस. फोगाट ने चारे वाली फसलों, डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने कपास, डॉ. अजीत राठी ने पौध रोग नियंत्रण, डॉ. वी.एस. मोर ने बीज उत्पादन में सावधानियां, डॉ. एम.सी. कंबोज ने मक्का की काश्त, डॉ. पवन कुमार ने औषधीय व सुगंधित फसलों की खेती व डॉ. एम.एल. खिच्चड़ ने मौसम पूर्वानुमान का फसलों में महत्व सहित कई वैज्ञानिकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

बारानी क्षेत्रों में रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए बताई सस्य क्रियाएं

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के बारानी खेती अनुभाग के वैज्ञानिकों ने गांव बालावास के किसानों के साथ एक कृषि संबंधी गोष्ठी आयोजित की। विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन परियोजना के तहत किया गया।

उन्होंने बताया कि इस दौरान किसानों को राया व चने की पैदावार बढ़ाने के लिए उन्नत सस्य क्रियाएं जैसे समय पर बिजाई, बीज उपचार, समुचित खाद प्रबंधन, खेत में उचित पौधों की संख्या, पहिए वाले कसोले से निराई-गुड़ाई, उचित पौध सरंक्षण आदि की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। साथ ही किसानों को बदलते मौसम के अनुरूप सभी सस्य क्रियाओं को अपनाने पर बल दिया ताकि किसान फसलों की पैदावार बढ़ाने के साथ-साथ समुचित लाभ भी हासिल कर सकें। कार्यक्रम में इंजीनियर कुमार व डॉ. ममता फोगाट ने भी किसानों को जानकारी दी। इस दौरान लगभग 35 किसान शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**15.10.2020**	——	--

धान की सीधी बिजाई कारगर : डॉ. पूनियां

एचएयू के वर्चुअल कृषि मेले में दूसरे दिन आयोजित वेबिनार में वैज्ञानिकों ने रखे विचार

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में विभिन्न वेबिनार आयोजित किए गए। इस दौरान पहला वेबिनार धान की सीधी बिजाई विषय को लेकर किया गया। इस वेबिनार में सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.एस. पूनिया ने बताया कि यह विधि बहुत ही कारगर साबित हो रही है और प्रदेश सरकार की योजना मेरा पानी मेरी विरासत को भी सार्थक सिद्ध कर रही है। इससे न केवल पानी की बचत होती है बल्कि खर्च भी कद्दू करके की जाने वाली बिजाई से कम होता है। इससे फसल के उत्पादन या तो परम्परागत विधि के बराबर है या फिर अधिक होता है। इस वेबिनार के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान(अटारी के निदेशक डॉ. राजवीर सिंह, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एस. भुल्लर, सहायक वैज्ञानिक डॉ. जसवीर गिल, एचएयू से इंजीनियर अनिल सरोहा, डॉ. नवीश, डॉ. संदीप रावल के अलावा भठिण्डा से किसान गुरप्रीत सिंह, लुधियाना से अमृत इंद्र सिंह, यमुनानगर से जसबीर सिंह और मंगत राम सहित अन्य किसानों ने जुड़कर वैज्ञानिकों से सवाल-जवाब किए।

सिफारिश पर काम करने की जरूरत

वेबिनार के दौरान धान की सीधी बिजाई को लेकर किसानों ने अपने अनुभव भी वैज्ञानिकों के साथ साझा किए। इस दौरान असंध से कृषि विकास अधिकारी श्याम सिंह ने बताया कि धान की बिजाई को लेकर विश्वविद्यालय की सिफारिश हर साल 25 जून तक के लिए की गई है जबकि इसे मई के अंतिम सप्ताह से जून के प्रथम सप्ताह तक किए जाने के बारे में और अधिक शोध करने की जरूरत है। क्योंकि इस समय पानी व मजदूरों की समस्या नहीं होती।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**15.10.2020**	——	--

अंगूठे से दूध निकालने का तरीका गलत : डॉ. कक्कड़

स्वच्छता व दूध दोहने के तरीके का खास ध्यान रखें पशुपालक

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के कार्यक्रम के दूसरे वेबिनार का विषय दूधारू पशुओं में थनैला रोग व उसकी रोकथाम रखा गया जिसमें पशुपालकों को दूधारू पशुओं में होने वाले थनैला रोग के कारणों, उपचार व निदान को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय की केंद्रीय प्रयोगशाला के इंचार्ज डॉ. नरेश कक्कड़ ने कहा कि पशुपालक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखकर व अपने दूध दोहने के तरीके में बदलाव कर इस रोग पर काफी हद तक काबू पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कई पशुपालक अंगुठे की सहायता से दूध निकालते हैं जो कि गलत तरीका है, दूध को केवल बंद मुट्ठी से निकालने की आदत डालनी चाहिए। इसके अलावा दूध दोहने के बाद पशु के थनों को जीवाणु रोधक से साफ करना चाहिए। पशु के बैठने की जगह पर भी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

पशुपालक अपने स्तर पर भी कर सकते हैं रोग की जांच

डॉ. राजेश छाबड़ा ने बताया कि किसान बिना उचित जांच के ही उपचार के लिए पशु को एंटीबायटिक का अंधाधुंध प्रयोग करने लग जाते हैं जिससे पशु की जीवाणु रोधक क्षमता कम हो जाती है, जो घातक है। इसके अलावा प्रयोगशाला में जांच के बाद ही उचित उपचार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पशुपालन अपने स्तर पर भी कैलिफोर्निया मेसटाइटिस किट के माध्यम से घर पर ही थनैला रोग की जांच कर सकते हैं। वेबिनार में पशुपालकों ने वैज्ञानिकों से थनैला रोग के लक्षणों व उसके समाधान को लेकर प्रश्नोत्तर भी किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**15.10.2020**	——	--

एक-दूसरे की होड़ में अंधाधुंध खाद व बीज का प्रयोग न करें किसान : डॉ. छाबड़ा

किसानों को फसलों की पैदावार बढ़ाने के दिए सुझाव

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने को लेकर आयोजित वेबिनार में वैज्ञानिकों ने किसानों को रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तौर तरीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। आनुवांशिकी

सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई व देखभाल करे तो वह अच्छी पैदावार ले सकता है। वैज्ञानिकों ने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल की बिजाई करने से पहले अपने खेत की मिट्टी की जांच, पानी दूसरे की होड करते हुए फसल की बिजाई कर देते हैं तथा अंधाधुंध खाद व दवाइयों को फसल में डालते हैं, जिससे किसान को फसल से उचित उत्पादन नहीं मिल पाता और उसे आर्थिक नुकसान भी उठाना प्रदेश से किसान आशीष राय ने अपने विचार साझा करते हुए बताया कि उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश अनुसार चने की एच.सी.-5 किस्म की बिजाई की थी। इससे वैज्ञानिकों द्वारा बताए गए औसत उत्पादन 23 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की तुलना में उसे डेढ गुणा उत्पादन अधिक मिला है। इसके लिए उसे उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से सम्मानित भी किया गया। इसी प्रकार गांव दरियापूर(भिवानी)के किसान रामनिवास ने बताया कि वह पिछले पांच-छह सालों से टपका विधि से रेतीली जमीन में नरमा

इन वैज्ञानिकों ने दिए सुझाव

वेबिनार के दौरान डॉ. विक्रम ने गेहूं व जौ, डॉ. रामअवतार ने तिलहनी फसलों, डॉ. डी.एस. फोगाट ने चारे वाली फसलों, डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने कपास, डॉ. अजीत राठी ने पीध रोग नियंत्रण, डॉ. वी.एस. मोर ने बीज उत्पादन में सावधानियां, डॉ. एम.सी. कंबोज ने मक्का की काश्त, डॉ. पवन कुमार ने औषधीय व सुगंधित फसलों की खेती व डॉ. एम.एल. खिच्चड़ ने मौसम पूर्वानुमान का फसलों में महत्व सहित कई वैज्ञानिकों ने अपने विचार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**15.10.2020**	——	--

दुधारू पशुओं में थनैला रोग से बचाव के दिए टिप्स

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वर्चुअल कृषि मेले के दूसरे दिन के कार्यक्रम के दूसरे वेबिनार का विषय दूधारू पशुओं में थनैला रोग व उसकी रोकथाम रखा गया जिसमें पशुपालकों को दूधारू पशुओं में होने वाले थनैला रोग के कारणों, उपचार व निदान को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय की केंद्रीय प्रयोगशाला के इंचार्ज डॉ. नरेश कक्कड़ ने कहा कि पशुपालक स्वच्छता का विशेष ध्यान रखकर व अपने दूध दोहने के तरीके में बदलाव कर इस रोग पर काफी हद तक काबू पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कई पशुपालक अंगुठे की सहायता से दूध निकालते हैं जो कि गलत तरीका है, दूध को केवल बंद मुट्ठी से निकालने की आदत डालनी चाहिए। इसके अलावा दूध दोहने के बाद पशु के थनों को जीवाणु रोधक से साफ करना चाहिए। पशु के बैठने की जगह पर भी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यूण पंजाबी	**15.10.2020**	--	--

'ਵਰਸਿਟੀ ਮੇਲੇ ਦੌਰਾਨ ਡਾਕਟਰਾਂ ਵੱਲੋਂ ਪਸ਼ੂ ਪਾਲਕਾਂ ਤੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨਾਲ ਵੈਬਿਨਾਰ

ਦੁੱਧ ਚੋਣ ਲਈ ਅੰਗੂਠੇ ਦੀ ਬਜਾਏ ਮੁੱਠੀ ਵਿੱਚ ਦਬਾਉਣ ਦੀ ਵਿਧੀ ਦੱਸੀ

ਪੱਤਰ ਪ੍ਰੇਰਕ
ਟੋਹਾਣਾ, 15 ਅਕਤੂਬਰ

'ਵਰਸਿਟੀ ਮੇਲੇ ਵਿੱਚ ਲਾਲਾ ਲਾਜਪਤ ਰਾਏ ਵੈਟਰਨਰੀ 'ਵਰਸਿਟੀ ਕੇਂਦਰੀ ਪ੍ਰਯੋਗਸ਼ਾਲਾ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਡਾ ਨਰੇਸ਼ ਕੱਕੜ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਵਿੱਚ ਡਾਕਟਰਾਂ ਦੀ ਟੀਮ ਨੇ ਪਸ਼ੂ ਪਾਲਕਾਂ/ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਪਸ਼ੂਆਂ ਦੀ ਬਿਮਾਰੀ ਸਬੰਧੀ ਵੈਬਿਨਾਰ ਦੇ ਉੱਤਰ ਦਿੱਤੇ। ਡਾਕਟਰਾਂ ਨੇ ਦੁਧਾਰੂ ਪਸ਼ੂਆਂ ਨੂੰ ਵਾੜੇ ਤੇ ਥਣਾਂ ਨੂੰ ਥਨੈਲਾ ਰੋਗ ਤੋਂ ਬਚਾਉਣ ਸਬੰਧੀ ਜ਼ੋਰ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਪਸ਼ੂ ਵਾੜੇ ਦੀ ਸਫ਼ਾਈ 'ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਡਾਕਟਰਾਂ ਦੀ ਟੀਮ ਨੇ ਦੁਧਾਰੂ ਪਸ਼ੂ ਦੇ ਥਣਾਂ ਨੂੰ ਅੰਗੂਠੇ ਦੀ ਬਜਾਏ ਮੁੱਠੀ ਵਿੱਚ ਦਬਾਉਣ ਦੀ ਆਦਤ ਪਾਉਣ 'ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਟੀਮ ਨੇ ਦੁੱਧ ਚੋਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਦੁਧਾਰੂ ਪਸ਼ੂ ਦੇ ਥਣਾਂ ਤੇ ਥਣਾਂ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਦੀ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਫ਼ਾਈ 'ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਡਾਕਟਰਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਆਪਣੇ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਕੈਲੀਫੋਰਨੀਆ ਮੈਸਟਾਈਟਿਸ ਕਿੱਟ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਹੀ ਥਨੈਲਾ ਰੋਗ ਦੀ ਜਾਂਚ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਬਿਮਾਰੀ ਵੇਲੇ ਡਾਕਟਰਾਂ ਦੀ ਸਲਾਹ ਲੈਣ ਲਈ ਕਿਹਾ।

ਵੈਬਿਨਾਰ ਦੌਰਾਨ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦੇ ਜਵਾਬ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਮਾਹਿਰ। -ਫੋਟੋ: ਰੰਟੀ

ਹਾੜ੍ਹੀ ਦੀਆਂ ਫ਼ਸਲਾਂ ਸਬੰਧੀ ਦਿੱਤੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦੇ ਜਵਾਬ

ਟੋਹਾਣਾ (ਪੱਤਰ ਪ੍ਰੇਰਕ): ਖੇਤੀਬਾੜੀ 'ਵਰਸਿਟੀ ਹਿਸਾਰ ਵੱਲੋਂ ਲਾਏ ਗਏ ਕਿਸਾਨ ਮੇਲੇ ਦੇ ਦੂਜੇ ਦਿਨ ਹਾੜ੍ਹੀ ਦੀਆਂ ਫ਼ਸਲਾਂ ਤੋਂ ਲਾਹੇਵੰਦ ਪੈਦਾਵਾਰ ਲੈਣ ਲਈ 'ਵਰਸਿਟੀ ਦੇ ਫ਼ਸਲ ਵਿਗਿਆਨੀਆਂ ਨੇ ਵੈਬਿਨਾਰ ਜ਼ਰੀਏ ਕਿਸਾਨ ਨਾਲ ਜੁੜ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦੇ ਜਵਾਬ ਦਿੱਤੇ। ਵੈਬਿਨਾਰ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਡਾ. ਐੱਸ.ਕੇ. ਠਾਕਰ ਨੇ ਕੀਤੀ। ਵਿਗਿਆਨੀਆਂ ਵਿੱਚ ਡਾ. ਵਿਕਰਮ ਨੇ ਕਣਕ ਤੇ ਜੌਂ ਸਬੰਧੀ, ਡਾ. ਰਾਮ ਅਵਤਾਰ ਨੇ ਖਾਣ ਵਾਲੇ ਤੇਲ ਵਾਲੀਆਂ ਫ਼ਸਲਾਂ ਸਬੰਧੀ, ਡਾ. [illegible] ਨੇ ਚਾਰੇ ਦੀਆਂ ਕਿਸਮਾਂ, ਡਾ. ਉਪੇਂਦਰ ਸਿੰਘ ਸੰਗਵਾਨ ਨੇ ਨਦੀਨਨਾਸ਼ਕ ਸਬੰਧੀ, ਡਾ. ਅਜੀਤ ਨੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਬਿਜਾਈ ਤੇ ਕੰਮ ਮੁਕਤ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ, ਡਾ. ਦਵਿੰਦਰ ਜੈਨ ਨੇ ਮਟਰ ਦੀ ਫ਼ਸਲ ਬਾਰੇ, ਡਾ. ਪਵਨ ਨੇ ਔਸ਼ਧੀਆਂ ਤੇ ਸੁਗੰਧਿਤ ਫ਼ਸਲਾਂ ਬਾਰੇ ਤੇ ਡਾ. [illegible] ਨੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਮੌਸਮ ਦੇ ਪੂਰਵ ਅਨੁਮਾਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ ਤੇ ਕਿਸਾਨ ਦੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਦੇ ਉੱਤਰ ਦਿੱਤੇ।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	16.10.2020	02	03-06

बारानी क्षेत्रों में रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए बताई सस्य क्रियाएं

हिसार, 15 अक्तूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के बारानी खेती अनुभाग के वैज्ञानिकों ने गांव बालावास के किसानों के साथ एक कृषि संबंधी गोष्ठी आयोजित की।

विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन परियोजना के तहत किया गया। उन्होंने बताया कि इस दौरान किसानों को राया व चने की पैदावार बढ़ाने के लिए उन्नत सस्य क्रियाएं जैसे समय पर बिजाई, बीज उपचार, समुचित खाद प्रबंधन, खेत में उचित पौधों की संख्या, पहिये वाले कसोले से निराई-गुडाई, उचित पौध संरक्षण आदि की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यक्रम में इंजीनियर कुमार व डॉ. ममता फौगाट ने भी किसानों को जानकारी दी। इस दौरान लगभग 35 किसान शामिल हुए।

किसानों को सस्य क्रियाओं की जानकारी देते वैज्ञानिक।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**15.10.2020**	——	--

बारानी क्षेत्रों में रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए बताई सस्य क्रियाएं

किसानों को सस्य क्रियाओं की जानकारी देते वैज्ञानिक।

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के बारानी खेती अनुभाग के वैज्ञानिकों ने गांव बालावास के किसानों के साथ एक कृषि संबंधी गोष्ठी आयोजित की। विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन परियोजना के तहत किया गया। उन्होंने बताया कि इस दौरान किसानों को राया व चने की पैदावार बढ़ाने के लिए उन्नत सस्य क्रियांए जैसे समय पर बिजाई, बीज उपचार, समुचित खाद प्रबंधन, खेत में उचित पौधों की संख्या, पहिए वाले कसोले से निराई-गुड़ाई, उचित पौध सरंक्षण आदि की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। साथ ही किसानों को बदलते मौसम के अनुरूप सभी सस्य क्रियाओं को अपनाने पर बल दिया ताकि किसान फसलों की पैदावार बढ़ाने के साथ-साथ समुचित लाभ भी हासिल कर सकें। कार्यक्रम में इंजीनियर कुमार व डॉ. ममता फोगाट ने भी किसानों को जानकारी दी। इस दौरान लगभग 35 किसान शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**15.10.2020**	——	--

बारानी क्षेत्रों में रबी फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए बताई सस्य क्रियाएं

हिसार। किसानों को सस्य क्रियाओं की जानकारी देते वैज्ञानिक।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के बारानी खेती अनुभाग के वैज्ञानिकों ने गांव बालावास के किसानों के साथ एक कृषि संबंधी गोष्ठी आयोजित की। विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन परियोजना के तहत किया गया। उन्होंने बताया कि इस दौरान किसानों को राया व चने की पैदावार बढ़ाने के लिए उन्नत सस्य क्रियाएं जैसे समय पर बिजाई, बीज उपचार, समुचित खाद प्रबंधन, खेत में उचित पौधों की संख्या, पहिए वाले कसोले से निराई-गुड़ाई, उचित पौध सरंक्षण आदि की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। साथ ही किसानों को बदलते मौसम के अनुरूप सभी सस्य क्रियाओं को अपनाने पर बल दिया ताकि किसान फसलों की पैदावार बढ़ाने के साथ-साथ समुचित लाभ भी हासिल कर सकें। कार्यक्रम में इंजीनियर कुमार व डॉ. ममता फोगाट ने भी किसानों को जानकारी दी। इस दौरान लगभग 35 किसान शामिल हुए।